अन्ताक्षरी

कहानी माला—35

मेंढक की चतुराई

— विजयदान देथा

मेंढ़क की चतुराई

विजयदान देथा

एक था मेंढ़क। एक बार तालाब का निवास छोड़कर वह घूमने के लिये बाहर निकला। वह अपने ध्यान में मगन व निश्चित होकर फुदकता हुआ जा रहा था कि अचानक उसे मालूम हुआ कि पीछे से किसी ने उसकी टांग पकड़ली है; और टांग पकड़ते ही कोई उसे एकदम सीधा आकाश की ओर ले उड़ा। एक पैर से टंगा हुआ वह तो ऊपर की ओर उड़ता ही गया–'जैसे मेंढ़क के पंख लग गये हों। उसने सोचा कि भगवान का दूत उसे जिन्दा

ही स्वर्ग ले जा रहा है। उसके मन में काफी अभियान हुआ, कि सहसा उसकी नजर भगवान के दूत पर पड़ी तो तुरत पहिचान गया कि अरे तो कौआ है! आज तो बुरा फंसा। कैसे बचाव होगा? किन्तु अब डरने से भी गरज सरेगी! वह थोड़ा भी नहीं घबराया। मरने से तो अधिक हानि नहीं। कुछ न कुछ उपाय सोचना चाहिये!

उड़ते उड़ते वह कौआ मेंढ़क को खाने के लिए एक बड़ी शिला पर आकर बैठा, क्योंकि उड़ते उड़ते खा सकना संभव नहीं था! बड़े पत्थर पर मेंढ़क को उतारने के बाद उसे मारने की खातिर चोंच का प्रहार करने वाला था कि मेंढ़क जोर से हंसा। मेंढ़क का इस प्रकार खिल-खिल हंसना देख कौए को

बड़ा आश्चर्य हुआ! मरने की दुखद वेला यह हसना कैसा! कौए ने उससे पूछा—'बात क्या है? इस प्रकार खिल-खिल हंसे क्यों जा रहा है?' तब मेढ़क ने पूर्ण संयत स्वर में उत्तर दिया—यहां मेरा अजीज मित्र सांप रहता है। सच ही तू मुझे बहुत ही बढ़िया जगह पर लाया। मुझे मारने के पहिले ही वह तुझे खा जायेगा। मौत मेरी नहीं तेरी आई है। इस कारण मुझे बरबस हंसी छूट गई।

मेंढ़क की बात सुनकर कौआ डरा। उसने उसी क्षण मेंढ़क की टांग पकड़ली और वहां से उड़ा। उड़ते उड़ते वह एक पेड़ पर आकर बैठा। एक बड़ी डाल पर रखने के बाद चोंच का प्रहार

करने ही वाला था कि मेंढ़क फिर खिल-खिल हंसा। कौए का तो दिल ही बैठ गया। कैसा पगला मेंढ़क है सो मरने के समय रोने के बजाय हंस रहा है। शैतान कहीं का! पूछा—अरे बावले यों बार बार हंस क्यों रहा है? इस बार क्या बात हुई? मौत के सामने हंसते हुए तो तुझे ही देखा।

मेंढ़क ने हंसते हंसते ही जवाब दिया- 'मौत मेरी नहीं, तुम्हारी आई है। यहां मेरी धर्म बहिन एक बिल्ली रहती है। तू जरा मुझ पर चोंच का प्रहार करके तो देख, फिर तेरी क्या गत बिगड़ती है। इस बुरी कदर मारेगी कि फिर तू सपने में भी किसी मेंढ़क को पकड़ने की हिम्मत नहीं करेगी।' मेंढ़क की यह बात सुनकर

कौआ बेहद डरा। चोंच में मेंढ़क की टांग दबाकर वहां से उड़ा। उड़ते उड़ते वह भैरूंजी के चबूतरे पर आकर बैठा। भैरूजी की मूर्ति के सामने मेंढ़क को पटक उस पर चोंच मारने वाला ही था कि मेंढ़क फिर खिल-खिल हंसा। इस बार कौए ने भी एक हलकी-सी मुस्कान के साथ पूछा- 'पगले, अब यहां तुझे बचाने वाला कौन है? तू हंसा तो हंसा ही क्यों? तुझ पर मौत मंडरा रही है और तू बावले की तरह हंस रहा है।!' मेंढ़क ने उसी निडरता पूर्वक दृढ़ता के स्वर में जवाब दिया- मौत मुझ पर नहीं, तुझ पर मंडरा रही है। मुझे इसी काल-भैरव का इष्ट है। मैं दर्शन करने के लिए यहीं आ रहा था कि तूने बीच रास्ते में ही

पकड़ लिया। बिना दर्शन किये पानी का घूंट तक नहीं पीता। संयोग से तू खुद ही मुझे यहां ले आया। अपने इष्ट के ऐसे चमत्कार का तो आज ही पता चला! काल-भैरव की शरण में आने के बाद मुझे क्या डर? चोंच का वार करना तो दूर की बात, तू मन में इसका विचार भी कर तो सही, फिर देखना मेरा इष्टदेव तुझ में क्या बिताता है! तू यहीं का यहीं भस्म न हो जाये तो मुझे कहना।

यह बात सुनते ही कौआ तो थर-थर कांपने लगा। उसी क्षण मेंढ़क की टांग पकड़ वहां से उड़ा। उड़ता उड़ता उसी तलाब के किनारे वापस लौट आया, जहाँ उसने फुदकते मेंढ़क की टांग

पकड़ी थी। कौए को प्यास लगी। मेंढ़क को खाने के बाद वह डटकर पानी पीना चाहता था। उस तालाब के किनारे एक चिकनी व समतल शिला पड़ी थी। कौए ने मेंढ़क को शिला पर पटक, उसे खाने के लिए चींच का प्रहार करने की चेष्टा की, पर इस बार मेंढ़क कतई नहीं हंसा। तब कौए ने पूछा—शायद यहां तेरा कोई भी हिमायती नहीं है। यदि कोई हिमायती होता तो तूं हंसता जरूर। मेंढ़क ने उदास मुंह करके धीमे स्वर में जवाब दिया—तुम मुझे बिल्कुल ठीक कह रहे हो! यहां मुझे बचाने वाला कोई नहीं। अब मुझे निश्चित होकर खा सकते हो। किन्तु मारने के पहिले मुझ पर थोड़ी सी दया करें तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।

आपकी चोंच बहुत ही मोटी है। मुझे मरते हुए तकलीफ होगी। यदि आप चोंच को पानी में भिगोकर इस शिला पर घिस डाले तो वह एकदम तीखी हो जायेगी। मुझे मरते हुए तकलीफ नहीं होगी। फिर आपकी जैसी मरजी। मुझे तो मरना है ही। चाहे दुख से मरूं और चाहे सुख से। मैंने तीन बार आपके प्राण बचाये, यदि बदले में इतनी सी दया कर दें तो मैं मरता हुआ भी आपको आशिष दूंगा।

कौए ने सोचा कि इसमें क्या हानि? चोंच तेज करलूं तो मेरा क्या बिगड़ता है? बेचारे की बात रह जायेगी और मेरी भूख मिट जायेगी। मेंढ़क की तरफ आंख की पुतली घुमाकर बोला—पानी

में भिगोकर अभी इसी शिला पर चोंच भाले के समान तेज करता हूं। तू डर मत। यहीं बैठे रहना। इधर-उधर मत फुदकना। अभी वापस आया।

मेंढ़क कहने लगा- इधर-उधर फुदक कर मुझे कहां जाना हैं यदि आपको विश्वास न हो तो न जायें, मुझे क्या? मरने का क्या तो दुख और क्या सुख!

कौए ने नम्रता के साथ कहा- इस में अविश्वास की क्या बात? अभी वापस आया। तब तक तू अपने इष्टदेव को याद करले।

कौआ पानी में चोंच भिगोकर आया तब तक मेंढ़क फुदक

तालाब के पानी में घुस गया। पानी में जाते ही उसका कलेजा ठंडा हुआ। सोचने लगा- आज तो बचा जैसे ही बचा! अब कभी भी पानी से बाहर नहीं निकलूंगा।

उधर कौए को मारने के जोश में कुछ भी दूसरा खयाल नहीं था। शिला पर फटाफट अपनी चोंच घिसने लगा। जब चोंच काफी तेज हुई तो मेंढ़क पर प्रहार करने के लिए गर्दन ऊंची की, पर शिला पर मेंढ़क कहीं नजर नहीं आया। कौए ने इधर-उधर देखा। मेंढ़क की छाया तक नहीं। तब कौए ने मेंढ़क को आवाज लगाते हुए पुकारा- तू कहां गया रे! देख तेरे सुख की खातिर मैं चोंच कितनी तेज करके लाया। भाले की नोक के समान। जहां से

भी हो जल्दी आ।

मेंढ़क पानी के अन्दर ही से टर्र-टर्र करते हुए बोला—'चोंच से भी तेरी बुद्धि कहीं ज्यादा भोटी है। पहिले उसे तेज करके ला। फिर मुझे मारने की युक्ति सोच।' कौआ मेंढ़क का जवाब सुनकर बड़ा लज्जित हुआ। मुंह नीचा करके वहां से उड़ गया। धैर्य और दृढ़ता के बल पर मेंढ़क ने सिर पर आई हुई मौत से भी अपना बचाव कर लिया।

•

आपके जवाब के इन्तजार में—
शिवसिंहनयाल
'अलारिप्पु' बी-6/62 पहली मंज़िल सफदरजंग इन्कलेव,
नई दिल्ली—29, दूरभाष : ६१०६३२७

ज्योति लेजर टाइप सेटिंग
दिल्ली—110092